ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-301-303,YEAR- DEC.2016

भूमि उपयोग प्रतिरूप : इटावा जिले (उत्तर प्रदेश) के सन्दर्भ में

❑ डॉ0 हंसा लुनायच
❑ डॉ0 सुनील कुमार निमेष

'सर्वविदित है कि भूमि उपयोग मूलतः भूमि की शोषण प्रक्रिया है जिसमें भूमि का व्यावहारिक प्रयोग किसी निश्चित उद्देश्य से किया जाता है । भूमि उपयोग पर अध्ययन क्षेत्र की अर्थव्यवस्था निर्भर है। इसलिए भूमि उपयोग के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है । अध्ययन के निष्कर्षानुसार 15 प्रतिशत भूमि पर वन 13.45 प्रतिशत कृषि हेतु अनुलपब्ध 3.09 प्रतिशत आकृषित भूमि 7.00 प्रतिशत भूमि एवं सर्वाधिक (61.45 प्रतिशत) भूमि पर शुद्व कृषित भूमि विद्यमान है। जनपद का उत्तरी क्षेत्र कृषि कार्य हेतु उपयुक्त है जबकि दक्षिणी क्षेत्र में बीहड़ भूमि होने के कारण कृषि हेतु अनुपयुक्त है। इस क्षेत्र में बीहड़ भूमि के विस्तार को कम करने हेतु लघु स्तर के बांध/चेकडैम बनाने होंगे जिससे मृदाक्षरण की समस्या दूर हो सकें।

भौगोलिक अध्ययनों में विभिन्न स्थानों पर भूमि प्रयोग,भूमि उपयोग,व भूमि संसाधन उपयोग शब्दों का प्रयोग हुआ है। वर्तमान समय में भूमि उपयोग अध्ययन भी अत्यन्त आवश्यक है । इसका महत्व बतलाते हुए बारलोव आदि विद्वानों ने ठीक ही कहा है कि' भूमि समबन्धी समस्याओं एंव नीतियों के सभी विचार विमर्श का केन्द्र भूमि संसाधन का उपायोग है। "Land resource use is central to all discussion of land problems and policiies " [2] भूमि उपयोग से तात्पर्य है कि इस प्रकार भूमि विविध कार्यो एवं विभिन्न फसलों को उगाने में प्रयोग की जाती है। इसमें जलयुक्त भूमि, आवास, सड़के, परती, ऊसर व बंजर भूमि भी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त विभिन्न ऋतुओं में विभिन्न फसलो को उगाना भी इसके अध्ययन का एक महत्वपूर्ण भाग है। वास्तव मे हमारी दृष्टि में इसकी सबसे सार्थक परिभाषा यह होगी कि किस प्रकार सभ्यता के इस बढ़ते हुए काल में भूमि के अनुचित उपयोग एवं उसके ह्रासोन्मुख परिणामों को रोककर इस संसाधन का अधिकाधिक उचित उपयोग मानव कल्याण हेतु किया जाये।

भूमि संसाधन हमारे देश का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राकृतिक धन है। इसका उचित उपयोग देश वासियों के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। जिस भूमि, की जिस प्रकार की क्षमता है यदि उसी प्रकार उसका उपयोग किया जाता है तो इसका आशय है कि कि इस संसाधन का उपयोग हम भरपूर कर रहे हैं । यदि इसका उपयोग उपयुक्त नहीं है तो हम इस संसाधन का दुरूपयोग योग कर रहे हैं, जो कि इस महत्वपूर्ण संसाधन की उत्पादकता का ह्रास करेगा और साथ ही यह हमारी ह्रासोन्मुख प्रगति का रास्ता प्रशस्त करने में भी सहायता प्रदान करेगा।। अतः भूमि उपयोग मूलतः भूमि की शोषण प्रक्रिया प्रक्रिया है।[3] स्वतन्त्रता के पश्चात कृषि का देश की आत्मा के रूप में स्वीकारते हुये खेती को सर्वोच्य प्राथमिकता प्रदान की गई है।[4]

शोध प्रपत्र के उददेश्य – भूमि संसाधन का स्थान सभी संसाधनों में सर्वोपरि है क्योकि मानव के समस्त क्रिया–कलाप इससे संबधित होते है । अतः इस दृष्टिकोण से निम्न उददेश्य है :–

1. इटावा जिले में भूमि उपयोग का स्थानिक एंव कालिक विश्लेषण प्रस्तुत करनां।
2. अध्ययन क्षेत्र में व्याप्त विकास खण्डवार भूमि उपयोग विषमता को प्रकाश में लाना ।

अध्ययन क्षेत्र– इटावा जिला कानपुर मण्डल के सुदूर पश्चिम में 26020' से 27015' उत्तरी अक्षांश। तथा 78045' से 79022' पूर्वी देशान्तर के मध्य 2478.

❑ 1. सह आचार्य– भूगोल विभाग, राजकीय कन्या महाविद्यालय, चौमू–जयपुर, (राजस्थान) 2. सह आचार्य– भूगोल विभाग, नेशनल पी.जी. महाविद्यालय, भोंगाँव, जिला – मैनपुरी (उ0प्र0) भारत

09 वर्ग किमी0 में विस्तृत है। यह उत्तर में मैनपुरी, दक्षिण में म0प्र0 राज्य का जिला भिण्ड पश्चिम में आगरा और फिरोजाबाद एंव पूर्व में औरैया से घिरा हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र में 2011 की जनगणनानुसार 1581810 जनसंख्या है जिसमें 53.47 प्रतिशत पुरूष एवं 45.53 प्रतिशत स्त्रियां–निवास करती है। साक्षरता का प्रतिशत 78.41 है।[2] इसका प्रभाव भूमि उपयोग पर भी पड़ता है।

शोध विधितंत्र एवं आंकडों के स्रोत– प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतयः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है । जनपद इटावा के अर्थ एवं संख्याधिकारी कार्यालय से सांख्यिकी पत्रिका, जनगणना, हस्त पुस्तिका, प्रकाशित प्रतिवेदन, पत्र–पत्रिकाओं से अध्ययन हेतु सामग्री का संकलन किया गया है। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषणात्क पद्धति के द्वारा अध्ययन किया है।

भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारक– अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग को प्रभावित करने वाले कारकों में भौतिक, प्राकृतिक, आर्थिक, सामाजिक पर्यावरणीय एव राजनीतिक मुख्य है। साथ ही संचार के विभिन्न साधन और कृषि नवाचार भी भूमि उपयोग को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

भूमि उपयोग प्रतिरूप– वर्तमान समय में कृषि नवाचारों के उपयोग में वृद्वि, बढ़ता नगरीकरण, औद्योगीकरण एवं बढ़ते अधिवासों ने भूमि उपयोग पर अपना प्रभाव छोड़ा है जिस कारण भूमि संसाधन के उपयोग में भी परिवर्तन स्पष्टतयः झलकता है जिसे तालिका 01 से जान सकते हैं।

तालिका 01 इटावा जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप (2011)

क्र	भूमि उपयोग वर्गीकरण	क्षेत्रफल प्रतिशत में
1	वन भूमि	15.00
2	कृषि बेकार भूमि	2.57
3	वर्तमान परती भूमि	4.59
4	अन्य परती भूमि	2.40
5	ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि	3.08
6	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	10.57
7	चारागाह के अन्तर्गत भूमि	0.22
8	उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत भूमि	0.22
9	कृषित भूमि	61.46
	सम्पूर्ण योग	100.00

स्रोत– सांख्यिकी पत्रिका जनपद इटावा 2013

तालिका 01 के निष्कर्षानुसार सर्वाधिक (61.46प्रतिशत) कृषित भूमि विद्यमान है क्यो ? यह क्षेत्र गंगा–यमुना दोआब के मैदानी क्षेत्र के अन्तर्गत विद्यमान है। सबसे कम भूमि का क्षेत्रफल (0.22 प्रतिशत) उद्यानों, वृक्षों एवं झाडियों के अन्तर्गत है जिसका प्रमुख कारण है कि अब यहां के निवासियों में बाग–बगीचे लगाना बन्द कर दिये हैं क्योंकि इनसे आय कम प्राप्त होने लगी थी। इसके स्थान पर कृषि कार्य को वरीयता दी जाने लगी है। वन भूमि 15.00 प्रतिशत क्षेत्रफल पर जिसका कारण है कि समय–समय पर पौधरोपण का कार्यक्रम भी चलता है तथा वन सुरक्षा के उपयों को ध्यान में रखा जाता है और यहां के वनों में जंगली जानवर भी मिलते हैं। इस कारण वन सुरक्षित रहते है लगभग 7 प्रतिशत भूमि परती, 3 प्रतिशत आकृषित तथा 13.45 प्रतिशत कृषि हेतु अनुउपलब्ध भूमि है । ऊसर सुधार योजना के अन्तर्गत क्षारीय एवं रेह युक्त भूमि को सुधारकर कृषि योग्य बनाया गया है।

तालिका 02 इटावा जिले में विकास खण्डवार भूमि उपयोग प्रतिरूप (2011)

क्र	विकासखण्ड	सम्पूर्ण क्षेत्रफल वर्ग किमी.	वन भूमि (प्रतिशत में)	कृषि हेतु अनुपलब्ध (प्रतिशत में)	आकृषित भूमि (प्रतिशत में)	परती भूमि (प्रतिशत में)	शुद्ध कृषित भूमि (प्रतिशत में)
1	जसवंतनगर	268.03	8.62	12.31	1.34	5.25	72.49
2	बसरेहर	265.33	8.23	11.57	1.50	7.31	71.33
3	बढ़पुरा	380.58	23.84	16.25	6.32	6.50	47.31
4	ताखा	287.19	10.08	12.72	3.37	8.11	65.70
5	भरथना	273.70	6.57	15.00	2.16	8.27	67.99
6	महेवा	334.28	10.84	12.80	1.40	4.79	70.35
7	चकरनगर	380.25	32.87	12.46	4.68	5.83	44.14
8	सैफई	216.51	8.15	11.10	1.98	12.06	66.69
	ग्रामीण	2453.85	15.08	13.20	3.10	6.89	61.62
	नगरीय	24.24	3.55	63.38	2.97	9.67	20.41
	जनपद	2478.09	15.00	13.45	3.09	7.00	61.46

स्रोत– सांख्यिकीय पत्रिका जनपद–इटावा 2013.

उपरोक्त तालिका के निष्कर्षानुसार 15 प्रतिशत भूमि पर वन विद्यमान है। ये वन उष्ण कटिबंधीय कटीले वन हैं जो बीहड़ युक्त क्षेत्रों अर्थात जनपद के दक्षिणी भाग चम्बल, यमुना ,क्वारी एवं सिन्द के समीपवर्ती क्षेत्र में विकीर्ण रूप से विद्यमान हैं। ये मरूद्भिदी प्रकार की श्रेणी के अन्तर्गत जाने जाते हैं। । जनपद के दक्षिणी भाग के विकासखण्ड चकरनगर एवं बढ़पुरा है जिनमें क्रमशः 32.87 प्रतिशत

एवं 23.64 प्रतिशत कृषित भूमि की अधिकता है शेष विकासखण्डों में प्रतिशत से 9 के मध्य वन भूमि उपलब्ध है।

कृषि हेतु अनुउपलब्ध भूमि का प्रतिशत 13. 45 है जनपद मे इस प्रकार की भूमि के अन्तर्गत ऊसर एवं कृषि अयोग्य भूमि तथा कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि जिसके अन्तर्गत आवासीय क्षेत्र मार्ग जल क्षेत्र एवं मरघट (कब्रिस्तान) आते है । इस प्रकार की सर्वाधिक भूमि 63.38 प्रतिशत नगरीय तथा ग्रामीण क्षेत्र में 13.20 प्रतिशत विद्यमान है। समस्त विकासखण्डो में इस प्रकार की भूमि का प्रतिशत 11 से 17 प्रतिशत के मध्य है वर्तमान समय में अवसंरचनात्मक सुविधाओं के कारण इस क्षेत्र में भूमि वृद्वि होना स्वाभाविक है क्योकि बुन्देलखण्ड एक्सप्रेस, वे विभिन्न बाईपास आदि के विनिर्माण से भूमि में वृद्वि हो रही है।

आकृषित भूमि के अन्तर्गत कृषि कार्य की संभावनाएं विद्यमान रहती हैं। इसके अन्तर्गत कृषि योग्य बंजर भूमि, चारागाह, उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है जिसको तालिका 02 से जाना जा सकता है। सर्वाधिक (6.32 प्रतिशत) एंव सबसे कम (1.34 प्रतिशत) आकृषित भूमि कमशः बढ़पुरा एवं जसवन्तपुर विकासखण्डों की है। शेष विकासखण्डो में से 1 से 5 प्रतिशत के मध्य इस प्रकार की भूमि सम्मिलित है।

अध्ययन क्षेत्र इटावा में विवेच्य वर्ष के अन्तर्गत 7 प्रतिशत भूमि वर्तमान तथा अन्य परती भूमि आती है। सर्वाधिक 12.06 प्रतिशत सैफई में एवं सबसे कम 4.79 प्रतिशत महेवा विकासखण्डों में परती भूमि विद्यमान है यह कृषकों के द्वारा तथा निजी एवं प्राकृतिक कारणोंवश कुछ समय के लिये अनाज उत्पादन से वंचित रखा जाता है या रखते है।

कृषित भूमि के अन्तर्गत फसलों के बोये जाने वाले क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। अद्यतन अध्ययन क्षेत्र में 61.46 प्रतिशत भूमि कृषित है। जसवन्तनगर विकासखण्ड में सर्वाधिक (72.49 प्रतिशत) एवं चकरनगर में सबसे कम (44.14 प्रतिशत) कृषित भूमि है। शेष विकासखण्डों में 44 से 72 प्रतिशत के मध्य कृषित भूमि है। इस प्रकार की भूमि निरन्तर आवासीय क्षेत्र के फैलाव एवं अवसंरचनात्मक कार्यों के कारण, भविष्य में कम होती जा रही है जो चिन्ताजनक बात है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– भूमि संसाधन पर निरन्तर बढ़ते दबाब के फलस्वरूप कृषित भूमि में कमी होती जा रही है। कृषि हेतु अनुउपलब्ध भूमि में वृद्वि स्वाभाविक है। ऐसा जनसंख्या दबाब के फलस्वरूप हो रहा है। जनपद के दक्षिणी भू–भाग में बीहड़ी क्षेत्र पर्यावरण दृष्टिकोण के जैवविविधता से युक्त है , उसके साथ छेडछाड़ अनुचित होगी। इसलिए हमें विनिर्माण क्षेत्र में सोच–समझकर निर्माण कार्य करना चाहिए। बीहड़ी क्षेत्र में भू–क्षरण की समस्या के रोकथाम हेतु चैकडैम एवं वृक्षारोपण कार्य समय–समयपर कराना उचित होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पवार, आर.एस. एवं शर्मा, श्री कान्त (2007) समविन्वत ग्रामीण विकास एंव प्रादेशिक नियोजन, डिस्कवरी, पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली पृष्ठ–95.
2. Barlowe, R. and Johnson,V.(1954) Land problem and policies. Mc Graw Hill Book Company N.C . New York. P-99.
3. राजपूत, प्रेम प्रकाश (2001) ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा उपयोगः संकट एवं समाधान, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर पृष्ठ–47.
4. रोजगार समाचार, 30जून–5 जुलाई 2015,पर्यावरण संकट एक चुनौती, पृष्ठ 23.
5. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड 2014, वार्षिक प्रतिवेदन, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय नई दिल्ली।
6. दैनिक जागरण, वाराणसी एडिशन,5 जून 2015, पृष्ठ– 9.